बलाई इतिहास की खोज

परिणय परिचय पत्रिका

संकलन - परिणय परिचय पत्रिका

खोज -| श्री के एस मांगोदिया

❖ क्या बलाई जाति बुनकर है ?

ईसवी सन 1891में तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने सम्पूर्ण ब्रिटिश भारत की जनगणना करवाई थी। तत्कालीन जनगणना कमिश्नर J A BaiNes (I.C.S) ने १० जुलाई १८९३ ईस्वी को Census of India,1891 General Report का सरकारी प्रकाशन करवाया।जिसकी मूल प्रति यूनिवर्सिटी ऑफ मिनिसोटा में सुरक्षित रखी है। इस सरकारी जनगणना रिपोर्ट के पेज नंबर 197 पर weaver group मतलब बुनकर वर्ग समूह में भारत की कुल 13 जातियों को चिन्हित किया गया था। इनमे क्रमांक 5 पर Balai caste(बलाई जातिहै (, जिनकी जनसंख्या 1891 में ३०५६३५ थी। तब की अंग्रेज सरकार ने बलाई * जाति को weaver मतलब बुनकर श्रेणी की जाति बतलाया गया है।जिसके कार्य व्यवसाय का कालांतर में पतन हुआ।।

उज्जैन, रतलाम, शाजापुर के सरकारी डिस्ट्रिक गाजेटीएयर)1965) जो की सरकार द्वारा जारी प्रत्येक जिले की प्रमाणित परिचय पुस्तिका होती है का अवलोकन व अध्ययन करे । इनके पेज नंबर १३४ एवम ७८ पर बताया गया है कि बलाई जाति मूलत weaver याने बुनकर वर्ग की जाति थी,,जो अपनी कला भूल गई।। ओर कालांतर में बेरोजगारी, कर्ज, भूखमरी के कारण कृषि श्रमिक,, बंधुवा मजदूर व अन्य निम्न बेगारी के पेशों में चली गई।

Note कृपया समय निकाल कर पुस्तक का अध्ययन करे।

❖ ग्रामीण बलाई जाति के भोजन एवम पोषण स्तर पर शोध कार्य कहा और किसने किया था ?

1981 ईसवी के जनगणना के बाद भारत में कुपोषण के जातिगत संकेतको पर भी विचार किया जाने लगा । इसी संदर्भ में मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाकों में सवर्ण, ST,SC,OBC जातियों में पोषण के स्तर पर अनेक शोधकार्य किए गए। सुश्री G.S. लक्ष्मी और श्री B.B. बंदोपाध्याय ने मध्यप्रदेश के भोपाल के निकट सीहोर जिले की इच्छावर तहसील के ग्रामीण इलाके में बलाई जाति में पोषण के स्तर और स्वास्थ्य दशा पर तुलनात्मक शोध कार्य किया । उनका शोधपत्र प्रसिद्ध समाजशास्त्री Dr. BM मुखर्जी और Dr. फरहाद मलिक ने अपनी पुस्तक **ट्राइबल पिपल ऑफ सेन्ट्रल इंडियाप्रोब्लेमस एंड प्रॉस्पेक्ट ::** में प्रकाशित किया गया। इस पुस्तक के अध्याय क्रमांक २४ पेज क्रमांक ३५५ ,पर वो स्पष्ट लिखते है कि बलाई मूल रूप से कपड़ा बुनकर और ग्राम कोटवार पेशेवर जाति थी, जो मजदूर वर्ग में रूपांतरित हो गई ।

इस शोध पत्र में बलाई जाति के विषय में व्यवहारिक जानकारी लिपिबद्ध की गई है।

Note:: कृपया समय निकाल कर पुस्तक का अध्यन करे। जो को ebook रूप में ऑनलाइन गूगल प्ले पर भी उपलब्ध है।

❖ सन 1916 ईसवी में किस सरकारी पुस्तक में तत्कालीन सेंट्रल प्रोविंस प्रांत की बलाई जाति का परिचय दिया गया है ?

सन 1911 ईसवी की जनगणना के बाद तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने भारत की विभिन्न जातियों के बारे में एक परिचय पुस्तक प्रकाशित करने हेतु तत्कालीन जनगणना निर्देशक रॉबर्ट वैन रसेल)I.C.S.) को सुप्रीटेंडेंट ऑफ एथनोग्राफी के पद पर नियुक्त किया और आदेश दिया कि वो तत्कालीन सेंट्रल प्रोविंस प्रांत में रहने वाली जातियों पर एक सरकारी परिचय पुस्तक लिखे ताकि भारत में नवनियुक्त अंग्रेज ICS ऑफिसर्स तब के)IAS) को भारत की जातियों से अवगत करवाया जा सके। इसके अलावा ब्रिटेन में रहने वाले निति निर्माताओ को भी भारत के समाज की जानकारी दी जा सके।

तब सर रॉबर्ट रस्सेल ने एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर रायबहादुर हिलालाल राय के सहयोग से तत्कालीन सेंट्रल प्रोविंस में रहने वाली सभी प्रमुख जातियों पर सन 1911 ईसवी की हालत में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कि जिसे सन 1916 ईसवी में सरकारी खर्च पर लंदन में प्रकाशित किया गया ।

इस पुस्तक के पेज नंबर 105 पर बलाई जाति का परिचय **A low functional caste of weaver and village Watchmen** के रूप में किया है। मतलब, कपड़ा बुनकर और ग्राम कोटवार का कार्य करने वाली निम्न जाति । ये सन 1911 ईसवी की हालत थी , जब की भारत का बाजार मशीनी कपड़े से भर चुका था। जिसके विरुद्ध सन 1905 ईसवी का स्वदेशी आंदोलन भी अल्प प्रभाव के साथ कुछ बड़े नगरों में चल रहा था। सूती कपड़े का गौरवशाली कुटीर उद्योग तब तक भारत में लगभग खत्म हो चुका था।
इस आलेख में सर रॉबर्ट रासेल, वर्तमान MP के बुरहानपुर के बलाहियो के लिए bunkar शब्द के प्रचलन की जानकारी देते है। 1897 ईसवी के अकाल का भी उल्लेख करते है।

इस रिपोर्ट को the tribe and caste of the central provinces of India के नाम से प्रकाशित किया गया ।
Note: कृपया समय निकाल कर पुस्तक का अध्यन करे। पुस्तक ऑनलाइन ebook रूप में भी उपलब्ध है।

❖ बलाइयों ने आने वाली पीढ़ी को अपनी काला आगे ट्रांसफर क्यों नहीं की ?

बोर्न यूनिवर्सिटी जर्मनी के शोधकर्ताओं ने देवास MP के पास ग्राम रामखेड़ी 1955 ईसवी व ग्राम जामगोद 1990 ईसवी का आर्थिक सामाजिक सर्वे किया था , इसमें विगत समय में भारत में आर्थिक व ओद्यौगिक परिवर्तनों के कारण ग्रामीण भारत में समाज की जातियों में जो परिवर्तन हुवे उसे लिपिबद्ध किया गया । इसमें बलाई जाति का भी उल्लेख है। इसमें इंगित किया गया है कि बलाई जाति ने मालवा में अपने पैतृक जातिगत weavar बुनकर व्यवसाय कार्य को **पूर्णतः** छोड़ दिया। बुजुर्गो ने आने वाली पीढ़ी को अपनी कला आगे ट्रांसफर नहीं की क्योंकि अब मशीनियुग में उनकी कला का कोई ओचित्य ही नही बचा था। हम बलाई अपना शिल्प इतिहास भूल गए।
Note --कृपया इस शोध पत्र का अध्यन करेजर्मन आंग्ल भाषा में होने के कारण स्पेलिंग में अ) .ंतर है,लेकिन आप जर्मन आंग्ल भाषा में उनके आशय को आसानी से समझ सकते है(

❖ क्या बलाई जाति के लोगो ने अपने बनाए कपड़ो को किसी प्रदर्शनी मे शामिल कराया?

4 दिसंबर 1883 ईसवी को तत्कालीन ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड रिपन ने कलकत्ता इंटरनेशनल एग्जीबिशन १८८३#१८८४ का भव्य आयोजन किया। जिसका उद्देश ब्रिटिश भारत के उत्पादों के विदेशों,, खासकर अन्य यूरोपीय देशों में प्रत्यक्ष व्यापार को बढ़ावा देना था।ताकि ब्रिटिश इंडिया के राजस्व में वृद्धि हो सके । नरसिहदास बलाई और केदारमल बलाई नामक दो जागरूक बलाई बुनकरों ने इस आयोजन के महत्त्व को समझा। ये बलाई बुनकर जो प्रायः सूती कपड़े का उत्पादन करते थे ने यूरोपीय देशों की शीतल जलवायु के मद्देनजर ऊनी धागों से कम्बल,कालीन, शाल,गलीचे व आसान बनाय ओर लगभग १७०० km दूरी तय कर अपने उत्पादों के साथ कलकत्ता की इस अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनी ने भाग लेने पहुंचे।

मार्च १८८४ ईसवी को प्रदर्शनी समाप्ति के बाद इनके आर्टिकल्स को विक्टोरिया अल्बर्ट संग्रहालय लंदन में भेजा गया। इस विषय जानकारी का उल्लेख सरकारी प्रकाशन १८८५ ईसवी में ऑफिशियल रिपोर्ट ऑफ द कलकाता इंटरनेशनल एग्जीबिशन 1883-1884 नामक पुस्तक के पेज नंबर 480 पर है। जिसकी मूल प्रति ब्रिटिश अभिलेखागार में सुरक्षित है।
नोटकृपया समय निकाल कर पुस्तक का अध्ययन करे। --

❖ बलाई जाति पर लिखी वह कोन सी पुस्तक है जिसे भारत सरकार ने अपने पोर्टल पर ऐतिहासिक धरोहर पुस्तक के रूप में प्रदर्शित किया है ??

भारत सरकार केवल प्रमाणिक व धरोहर विरासत श्रेणी की पुस्तको को ही www.indianculture.gov.in नामक अपने सरकारी पोर्टल पर अपलोड करती है। इन पुस्तको को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा विश्वसनीय अभिलेख के रूप में संरक्षित किया जाता है।

बलाई जाति का वर्ष १९३३ ईस्वी में वर्तमान के MP के निमाड़ खंडवा जिले में वैज्ञानिक तरीके से अध्यन किया गया था। इसमें तत्कालीन अछूत बुनकर बलाई जाति का पेज नंबर 417 से 440 पर विस्तार से वर्णन है, ओर बतलाया गया है कि किस तरह से भारत के गौरवशाली वस्त्र बुनाई उद्योग के पतन से बलाई बुनकर संघर्ष कर रहे थे। उनमें से के कैसे कुछ लोग छोटे किसान, कपास के कस्तकार, चौकीदार, कोटवाल,कृषि मजदूर और बंधुआ मजदूर बन चुके थे।

पुस्तक का नाम है द चिल्ड्रन ऑफ़ हरि ए स्टडी ऑफ द निमाड़ बलाही इन द सेंट्रल प्रोवेंस जिसे : ईसवी १९५० में यूरोप के वियेना शहर में verlag herold publication द्वारा प्रकाशित किया गया था।

नोट कृपया ::समय निकाल कर पुस्तक का अध्यन करे। इस पुस्तक के कुछ स्क्रीन शॉट संलग्न है। ये पुस्तक e book रूप में उपरोक्त सरकारी वेबसाइट पर निशुल्क उपलब्ध है।

❖ सन 1928 ईसवी में निमाड़ खंडवा जिले की बलाई जाति पर किस यूरोपीय मानवशास्त्री ने शोध पत्र लिखा था ??

वर्ष 1922 में ऑस्ट्रिया से सर स्टाफिन फिंच भारत आए उन्होंने तब के सेंट्रल प्रोविंस के खंडवा शहर में रहते हुवे 1922 से 1927 तक लगभग 5 वर्ष तक विभिन्न जातियों पर शोध कार्य किया लेकिन उनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य था बलाई जाति के तत्कालीन रिति रिवाजो को लिपिबद्ध करना। जिसे उन्होंने 1928 ईसवी में द निमाड़ी बलाई कोड ऑफ कॉस्ट लॉज एंड इट्स इंफोर्समेंट शीर्षक से प्रकाशित किया जो की जार्ज वेसिंगटन यूनिवर्सिटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक प्रिमिटिव मैन में पृथक अध्याय के रूप में पेज नंबर 81 से 104 पर शामिल है। इस शोध पत्र में स्टेफिन फिंच बलाई जाति का परिचय weaver याने सूती वस्त्र बनाने वाली एक अछूत बुनकर जाति के रूप में देते है, जो मशीनी कपड़े के आगमन के बाद बेरोजगार होकर कृषि मजदूर, छोटे कास्तकार, चौकीदार, संदेशवाहक और बंधुआ मजदूर बन चुकी थी।
कृपया समय निकाल कर पुस्तक का अध्यन करे, जो की www.jstor.org पर ऑनलाइन भी उपलब्ध है।

❖ बलाई बुनकर की कोई को-ओपरेटिव सोसाइटी रही है ?

महेश्वर के मल्हारगंज में बड़ी संख्या में बलाई बुनकर बुनाई का काम करते थे। होलकर रियासत ने इंदौर स्टेट कॉपरेटिव सोसाइटी एक्ट १९१४ बनाया ताकि अंग्रेजी कपड़ा मिलो व औद्योगिक कपड़ा मिलो की प्रतिस्पर्धा में इस कला को किसी तरह जीवित रखा जा सके। जिसके तहत माहेश्वर के बुनकरों को आर्थिक सहायता दी,गई।। जिसके लिया बलाई, खत्री व मोमिन जाति के बुनकरों ने फॉर्म भरे ।। जिसपर 19 बुनकर सहकारी सोसाइटी रजिस्टर्ड की गई।

खत्री जाति जो सूरत से आई थी ज्यादा कुशल , पढ़ी लिखी व प्रभावशाली थी ने 19 में से 16 पर कब्जा कर लिया। बलाई बुनकर जो कि स्थानीय , अनपढ़ थे,,बड़ी मुश्किल से फॉर्म भर कर २४ जून १९२७ में अपने आप को **<u>गंगा बलाई बुनकर कॉपरेटिव सोसाइटी तथा रेणुका बलाई बुनकर कॉपरेटिव सोसाइटी के रूप में रजिस्टर्ड करवा पाए।</u>** मार्केटिंग व कैपिटल स्किल की कमी के कारण बलाई बुनकर पिछड़ गय ,ओर महेश्वर के कपड़ा उद्योग पर बाहर से आई खत्री,मारू,मोमिन जातियों की मोनोपॉली हो ।

K C दुबे डिप्टी सुप्रीटेंडेंट ऑफ सेंसस ऑपरेशन MP व H C जैन रिसर्च investigator ने भारत की जनगणना 1961 वॉल्यूम आठ, मध्य प्रदेश ,पार्ट 7/A,* हैंडीक्राफ सर्वे मोनोग्राफ नंबर 2 हैंडलूम साड़ी इंड्रिस्ट्री ऑफ मध्य प्रदेश का सरकारी प्रकाशन करवाया। जिसकी मूल प्रति भारत सरकार व मध्य प्रदेश सरकारके * जनसंख्या अभिलेखागार में मौजूद है। इस सरकारी जनगणना रिपोर्ट के पेज नंबर11 पर Balai caste(बलाई जातिके साथ घटी इस घटना का विवरण है (। इसमे यह भी स्पष्ट लिखा है, कि बलाई जाति सरकारी योजना का लाभ लेने में पिछड़ गई, ओर महेश्वर के साड़ी बुनाई मार्केट से बाहर हो कर अन्य पेशों में चली गई। तब की भारत सरकार ने 1961 की जन गणना में महेश्वर की बलाई जाति को *weaver मतलब बुनकर श्रेणी की जाति बतलाया गया है।जिसके कार्य व्यवसाय का कालांतर में पतन हुआ।।
Note कृपया समय निकाल कर पुस्तक का अध्ययन करे।

❖ बलाई लोग ग्राम चौकीदार, संदेशवाहक,पोस्टमैन, हरकारे कैसे बने ?

औद्योगिक कपड़े के भारत के बाजार में आगमन से हजारों लाखों की संख्या में बलाई बुनकर बेरोजगार हुए। बेरोजगारी ,कर्ज व भूखमरी से त्रस्त होकर बलाई बुनकरों ने देशी राजे रजवाड़ों से गुहार लगाई। जिस पर तत्कालीन पश्चिम भारत के राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र के छोटे बड़े राजे रजवाड़ों ने कोटवार (ग्राम चौकीदार) मेघवारबारिश के पानी को सहेजने वाली जल संरचनाओं) , सिंचाई तालाबों, नहर के देखभाल करने वाले कर्मचारी (,चौबदार संदेशवाहक),पोस्टमैन, हरकारेके रूप में हजारों बेरोजगार बलाई (बुनकरों को सरकारjob दी। लेकिन वेतन नगद नही दिया गया। कृषि भूमि के टुकड़े अनुवांशिक सेवा शर्त के रूप में दे देय गय।

उस वक्त देशी रियासतों की प्रजा का एक बड़ा भाग जन जातियां थी। जो दुर्गम इलाकों के वन ग्रामों में बसती थी। संचार व परिवहन के साधनों से दूर होने के कारण उनकी स्थिति आखेटक की थी। जो कि देशी राजे रजवाड़ों के कानून, प्रशासन, तकनीकी सुविधाओ से दूर, अपने आप में आइसोलेटेड थे या बहुत कम संपर्क में थे। देशी रियासत के राजे रजवाड़ों ने इन बलाई कोटवारों, मेघवालो, चोबेदारो की पोस्टिंग अपनी रियासत के गांव गांव में कि थी।

अपनी ड्यूटी के निर्वाह हेतु ये नव नियुक्त बलाई कोटवार, मेघवाल, चौबदार नगरों व सुगम उन्नत गांवो को छोड़ कर दुर्गम जनजाति गांवो में सपरिवार बस गय। इस प्रकार ये बलाई कोटवार, एकांत प्रिय जनजाति वन ग्रामों और पुलिस, प्रशासन, पटवारी के बीच सेतु बने। वहा जाकर उन्होंने अपने बुनाई शिल्प को पुनः जीवित किया ओर जनजातीय संस्कृति में वस्त्रों की जो कमी तकनीकी कारणों से उस समय मौजूद थी तो दूर करके जनजातीय संस्कृति की वेशभूषा को वर्तमान स्वरूप प्रदान किया। इस कारण कोरकू, भील, बारेला समाज ने इनका स्वागत किया ये लोग भी इन इलाको में स्थानीय बोली, तीज त्यौहार को अपनाकर जनजाति समाज के साथ घुलमील गय।

कोटवार job वाले, परिवारों ने अपने ही वर्ग में विवाह को बढ़ावा दिया। ऐसा ही मेघवाल job वाले और चोबेदार job वाले परिवारों ने किया। लेकिन जैसे जैसे परिवहन व संचार का विस्तार हुआ। ओद्यौगिक कपड़े ने जनजाति इलाको के हाट बाजारों में भी कब्जा जमा लिया। जिससे इन इलाको में भी इनके बुनाई शिल्प का महत्व खतम हो गया । बलाई बुनकर भी अपनी कला भूल गय। अनुपयोगी व अत्यंत समय साध्य होने के कारण पिता ने पुत्र को बुनाई की कला सिखलाने में रुचि नहीं ली।

कोटवार परिवार को दी गई अनुवांशिक कृषि भूमि के बटवारे उनकी २ पीढ़ी में हो गय। अब इन इलाको३/ में ऐसे बलाई कोटवार परिवारों की हालत पुनः कमजोर हो गई। इन इलाको में पड़े अकाल का कुप्रभाव भी इनकी सामाजिक स्थिति पर हूवा। जमींदारी इलाको में कर्ज के कारण, बंधुआ मजदूर की स्थिति को भी इन्होंने झेला। फिर भी नगरों व उन्नत गांवो से कोटवार,मेघवाल, चोबेदार की गवर्नमेट ड्यूटी करने दुर्गम वन ग्रामों में इनके शिफ्ट होने से जनजाति समाज में वेशभूषा क्रांति हुई। यह कारण है कि आज भी दुर्गम इलाकों में बलाई कोटवार व जनजाति बुजुर्ग ,जो जानकर है। सामाजिक सद्भावना के साथ रहते है।
Note:- कृपया समय निकाल कर जनजाति समाज में प्रगति संबंधित पुस्तको का अध्यन करे

यह दस्तावेज़ परिणय परिचय पत्रिका का भाग है

❖ बलाई जाति में पांडे, उपाध्याय, पंडित, आर्य, बामनिया सरनेम कहा से आए?

1928 ईसवी में इंदौर रियासत में सवर्ण समाज द्वारा बलाई जाति के लोगो से भेदभाव के विरोध में आत्मसम्मान आंदोलन चलाया गया था। हातोद, सावेर, देवगुरारिया, mhow के निकट कोदरिया के कुछ प्रगतिशील बलाई बंधुओ ने आर्यसमाज आंदोलन से प्रेरणा लेकर ये सब धार्मिक सामाजिक कार्य स्वयं करने का आवाहन किया। इंदौर की होलकर रियासत, धार की पवार रियासत उदार श्रेणी की रियासते थी। इन्होंने भी बलाई समाज के इस प्रगतिशील प्रयास का दमन नही किया।

कुछ बलाई बंधुओ ने आर्य समाज के प्रचारकों से धार्मिक कर्मकांड की विधियां सीखी ओर बलाई समाज में विवाह यज्ञ, सूरज पूजा, पितृ दान जैसे कार्य करने लगे . इन कुछ बलाई जनों के इस दुस्साहस का खूब विरोध हुआ। न केवल सवर्ण समाज ने अपितु अपने ही बलाई लोगो ने इनकी खूब आलोचना की। इंदौर में आज भी बलाई समाज का राधाकृष्ण मंदिर है। जो की उसी आत्मसम्मान आंदोलन का परिणाम है। जो लोग इस में अगुवा बने उनके वंशज आज भी पाण्डे, उपाध्याय, बामनिया, पंडित, आर्य सरनेम लगाते है। उस वक्त अपने ही समाज के रूढ़िवादी लोग जो परिवर्तन या उत्थान विरोधी थे के कारण ये आंदोलन असफल हो गया था।

❖ क्या किसी किताब में बलाई जाति का परिचय दिया गया है ?

सन 1911 ईसवी की जनगणना के बाद तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने भारत की विभिन्न जातियों के बारे में एक परिचय पुस्तक प्रकाशित करने हेतु तत्कालीन जनगणना निर्देशक रॉबर्ट वैन रसेल)I.C.S.) को सुप्रीटेंडेंट ऑफ एथनोग्राफी के पद पर नियुक्त किया और आदेश दिया कि वो तत्कालीन सेंट्रल प्रोविंस प्रांत में रहने वाली जातियों पर एक सरकारी परिचय पुस्तक लिखे ताकि भारत में नवनियुक्त अंग्रेज ICS ऑफिसर्स तब के)IAS) को भारत की जातियों से अवगत करवाया जा सके। इसके अलावा ब्रिटेन में रहने वाले निति निर्माताओ को भी भारत के समाज की जानकारी दी जा सके।

तब सर रॉबर्ट रस्सेल ने एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर रायबहादुर हिलालाल राय के सहयोग से तत्कालीन सेंट्रल प्रोविंस में रहने वाली सभी प्रमुख जातियों पर सन 1911 ईसवी की हालत में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कि जिसे सन 1916 ईसवी में सरकारी खर्च पर लंदन में प्रकाशित किया गया । इस पुस्तक के पेज नंबर 105 पर बलाई जाति का परिचय **A low functional caste of weaver and village Watchmen** के रूप में किया है। मतलब, कपड़ा बुनकर और ग्राम कोटवार का कार्य करने वाली निम्न जाति ।

ये सन 1911 ईसवी की हालत थी , जब की भारत का बाजार मशीनी कपड़े से भर चुका था। जिसके विरुद्ध सन 1905 ईसवी का स्वदेशी आंदोलन भी अल्प प्रभाव के साथ कुछ बड़े नगरों में चल रहा था। सूती कपड़े का गौरवशाली कुटीर उद्योग तब तक भारत में लगभग खत्म हो चुका था। इस आलेख में सर रॉबर्ट रासेल, वर्तमान MP के बुरहानपुर के बलाहियो के लिए bunkar शब्द के प्रचलन की जानकारी देते है। 1897 ईसवी के अकाल का भी उल्लेख करते है।

इस रिपोर्ट को **the tribe and caste of the central provinces of India** के नाम से प्रकाशित किया गया ।

Note: कृपया समय निकाल कर पुस्तक का अध्यन करे। पुस्तक ऑनलाइन ebook रूप में भी उपलब्ध है।

❖ जमींदारी राजस्व प्रणाली में बलाई जाति पर किस प्रकार से कर लगाए जाते थे?

भारत के विभिन्न भागों में अलग अलग देशी रियासत थी जो अलग अलग नामों से ,थोड़ी बहुत भिन्नता से विभिन्न प्रकार के tax अपनी प्रजा पर लगाके आपने राजस्व की प्राप्ति करती थी। मोटे तौर पर भारत के बड़े भू भाग पर देशी रियासतो द्वारा जमींदारी राजस्व प्रणाली के द्वारा राजस्व वसूली की जाती थी। इसके अंतर्गत दो श्रेणिया थी। लगान और लागबाग

१. **लगान** - भू राजस्व, जो कास्तकार अपनी कृषि उपज पर साल में फसल आधार पर भुगतान करता था।

२. **लागबाग-** जो पेशेवर जातियां अपने शिल्प कर्म से प्राप्त आय पर चुकाती थी, कुछ स्थानों पर इसे उपकार के रूप में भी वसूला जाता था

वर्तमान नीमच MP से लगभग 60 km दूर, राजस्थान के चित्तौड़ के निकट बड़ी सादड़ी नामक एक बड़ी जमींदारी थी, जिस पर झाला वंश के जमींदार ,मेवाड़ रियासत के अधीन होकर राजस्व प्रबंधन करते थे। 1947/1948 में जब मेवाड़ रियासत का भारत संघ में विलय हुवा तब इस बड़ी सादड़ी ठिकाने का भी विलय भारत संघ में हो गया। इस ठिकाने के राजस्व रिकार्ड इसके कर्मचारियों द्वारा बहुत ही अच्छे से संधारित किए गए थे। इन में 1907 ईसवी के तत्कालीन लगान व लागबाग से विभिन्न पेशेवर जातियों से वसूले जाने वाले अलग अलग tax कि जानकारी मिलती है। जैसे शराब बनानेवाले कलाल, कपड़े धोने वाले धोबी, कपड़े सिलने वाले दर्जी, फल फूल उगने बेचने वाले माली, तेल निकालने वाले तेली, जूते बनाने वाले मोची, मांस बेचने वाले खटीक , पान बेचने वाले तंबोली जो मुख्य कृषक नही थे अपितु पेशेवर जातियां थी,। उनपर कैसे tax लगाया जाता था। प्रायः Tax वसूली के लिए पृथक से अमला होता था। Dr देवीलाल पालीवाल और खुद बड़ी सादड़ी ठिकाने के वंशज राजराणा हिम्मतसिंह अपनी पुस्तक झाला राजवंश के पेज नंबर 271 पर तेली, पिंजरा, बलाई, खटीक से किस प्रकार tax वसूला जाता था इस बारे उल्लेख किया गया है। जो इस प्रकार है-

- २१.**बलाई** सूत (धागा) खरीद ले जाए तो उसकी (चांदी के सिक्के) रुपए में जो कीमत हो उस पर दो कुकड़या (तांबे के दो सिक्को) के बराबर tax लगेगा।
- २२. **बलाई** जो रेजा (मोटा सूती कपड़ा) बाजार में बेचे उस पर दो पैसा प्रति नग tax लिया जाए।

इसके अलावा वर्ष में एक बार दशहरे के त्योहार पर प्रत्येक बलाई परिवार से निसान की लागत आदा रेजा लिया जाए। यहां निसान की लागत का मतलब है कि दशहरे के दिन जो कपड़े के झंडे (कपड़ा), बैनर और राजमहल, दुर्ग ,किले की दीवारों और मंदिरों पर सजाए जायेगे उनकी व्यवस्था इनसे करवानी है।इसके अलावा वसीवान बलाई जो ठिकाने के कुशल कारीगर होते थे और बारीक कपड़ा बुनाई करते थे , वो उपहार स्वरूप दो नग कपड़ा (रेजा) मां साब याने बड़ी सादड़ी ठिकाने की सबसे बुजुर्ग राजमाता को भेट करेगे। हालाकि इस भेट को बाद में राजमाता द्वारा दान स्वरूप जरूरतमंदों को दीपावली के त्योहार पर वितरित किया जाता था।(

Note : कृपया समय निकाल कर , निष्पक्ष भाव से इस पुस्तक का अध्ययन करे। ये पुस्तक ऑनलाइन ebook रूप में भी उपलब्ध है।

❖ बलाई जाति में व्याप्त उपजातिवाद पर ब्रिटिश मानवशास्त्री ने क्या लिखा ?

लंदन यूनिवर्सिटी के सबसे प्रख्यात प्रोफेसर एड्रिन कार्टियोस मेयर का जन्म सन् 1922 ईसवी में हुवा था। उन्होंने ब्रिटिश शासन के दौरान वर्तमान गुजरात, ओडिसा और मध्यप्रदेश मालवा प्रांतों में विभिन्न शोध कार्य किए। भारत की आजादी के बाद भी उनका शोध कार्य जारी रहा।

सन 1956 ईसवी में उन्होंने मालवा के देवास जिले MP मे रहकर गहन शोधकार्य किया जिसे वर्ष 1960 ईसवी में यूनिवर्सिटी ऑफ केलिफोनिया द्वारा कॉस्ट एंड किनशिप इन सेंट्रल इंडिया ए विलेज एंड : इट्स रीजन नाम से पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया।

इस पुस्तक के पेज नंबर 152 पर प्रोफेसर मेयर द सब कॉस्ट शीर्षक से बलाई जाति में प्रचलित उपजातिवाद की बुराई का उल्लेख करते है। वो लिखते है कि गुजराती बलाई और मालवी बलाई दोनो ही weaver याने बुनकर कार्य व्यवसाय करने वाले वंश परिवार से जुड़े ग्रामीणजन है लेकिन वे एक दूसरे से अपने आप को भिन्न मानते है। इसी आधार पर उन्होंने बिरादरीउपजाति या किनशीप की अवधारणा / को प्रकट किया।

उपजातिवाद एक संकीर्ण विचारधारा है जो कि जातिगत भाईचारे के विपरीत गुण प्रदर्शित करती है। इस संकीर्ण विचारधारा का सबसे ज्यादा प्रचलन शुद्र वर्ण की शिल्पकार वर्ग की जातियों में पाया जाता है।
Note ::: कृपया समय निकाल कर अध्यन करे। यह पुस्तक www.Amazon.in पर बिक्री हेतु उपलब्ध है। ऑनलाइन pdf भी उपलब्ध है। इसका पेज नंबर १५२ स्क्रीनशॉट संलग्न है । जिसमे बलाई जाति को स्पष्ट रूप से बुनकर याने weaver बतलाया गया है।

K S Mangodiya
9977049226

उपरोक्त जानकारी “बलाई इतिहास की खोज” हमे श्री के एस मांगोदिया साहब से प्राप्त हुई है । श्री मांगोदिया विभिन्न जातियों पर शोध कार्य कर रहे है। श्री मांगोदिया का परिणय परिचय पत्रिका की और से ग्रुप की और से एवं पत्रिका के समस्त उपयोगकर्ता की और से बहुत बहुत धन्यवाद ।

कैलाश चौहान
परिणय परिचय पत्रिका के लिए संकलनकर्ता

परिणय परिचय पत्रिका